Independence Day Address, August 15, 2015 by Arun K. Grover, Vice Chancellor, Panjab University, Chandigarh.

माननीय मुख्य अतिथि Lt. General T.S. Gill, प्यारे बच्चों, सुरक्षाकर्मियों, NCC and NSS के युवा साथियो, विश्वविधालय के छात्रों, स्नातको एवं अध्यापको, PU Senate एवं Syndicate के सदस्यों, विश्वविधालय के कर्मचारियों और उनके परिवारजनों, PU Alumni Association के सदस्यों, पत्रकारिता से सम्बंधित मित्रो, भाइयो एवं बहनो, भारत के उन्न्तर्वे स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आपका अभिनंदन स्वीकारते हुए मैं आप सबको इस शुभ दिन की बधाई देता हूँ। देश की आज़ादी एवं लोकतंत्र शासन प्रणाली हमारे लिए ऐसी अमूल्य उपलब्धियाँ है जिनके प्रति हमेशा सजग एवं सतर्क रहना अनिवार्य है। 15 August के दिन हम अपने इन संकल्पों को दोहराने के साथ साथ, स्वतंत्रता के लिए किए गये प्रयासो एवं उसके लिए दी गयी कुर्बानियों का स्मरण करते हैं। आज़ादी एवं देश की अखंडता को कायम रखने के लिए यह क़ुर्बानियाँ सुरक्षाकर्मी एवं आम नागरिक आज भी दे रहे हैं। स्वतंत्रता एवं लोकतंत्र को शांतिपूर्वक बनाए रखना, यह वर्तमान समय मे चिंता एवं चिंतन का विषय है।

स्वतंत्रता दिवस पर देश के प्रधानमंत्री देशवाशियों को सम्बोधित करते हुए हर वर्ष कुछ नये कार्यो की और प्रेरित करते हैं। गतवर्ष प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने पाँच वर्षो के अंदर 2 October, 2019 तक एक आदर्श स्वच्छ भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए हमें वचनवद्ध किया था । पंजाब विश्वविधालय परिसर मे हम सब इस कार्य की और कितने लग्न रहे हैं, यह एक चिंतन का बिंदु होना चाहिए। भारत की अग्रणीय University होने के नाते, हमसे उम्मीदें बहुत अधिक हैं। मेरी आप से अपील है कि हम सब को मिलकर एक सुंयोजित कार्यक्रम के अनुसार Campus के दोनो सेक्टरों को स्वच्छ, स्वस्थ, हरा भरा, traffic congestion से मुक्त और pollution से रिक्त बनाने के प्रयासो मे तेज़ी लाने का संकल्प लेना चाहिए। इन उद्देश्यों के लिए कोई मतभेद या राजनीति करना अनावश्यक है।

अगस्त के मास मे हमारे विश्वविधालय मे विधार्थीयों एवं शिक्षको की चुनावी सरगर्मियों का माहौल रहता है, इसके फलस्वरूप यूनिवर्सिटी के सामने उन चुनोतियो का खुलासा हो जाता है जिनकी तरफ ध्यान देने की ज़रूरत सबसे अहम है। इतफाक से एक लंबे अरसे से पंजाब विश्वविधालय के कुलपतियों की नियुक्तियाँ भी जुलाई मास में ही हुई हैं। मैने

भी कुलपति का कार्यभार लगभग तीन वर्ष पूर्व 23rd July, 2012 को संभाला था और अपने पहले स्वतंत्रता दिवस के संदेश मे पंजाब विश्वविधालय के गौरवपूर्ण इतिहास का संक्षिप्त वर्णन किया था। मेरे उस संबोधन की लिखित प्रतिलिपि PU के webpage पर उपलब्ध है, साथ ही PU webpage पर uploaded है Radio Station Jyotirgamaya से प्रसारित किया गया मेरा पहला public address to the PU Community अपने कार्यकाल की पहली term के तीन साल पूरे होने के सन्दर्भ में मैने पिछले दो दिनो मे अपने पहले दोनो भाषणों का अवलोकन किया। मुझे आप सब से सांझा करते हुए संतोष है कि जिन कार्यो एवं विषयों की मैने तब चर्चा की थी, उनमे से अधिकांश पर मैने अमल किया और इसमे मुझे आप सबका और civil society का भरपूर सहयोग मिला । मिसाल के तौर पर अपने रेडियो संदेश मे मैने Honours Schools on behalf of Faculties of Arts, Languages and Fine Arts की संकल्पना की थी, उस समय मैं इस सच्चाई से अनिभिज्ञ था कि ऐसे प्रयास 90 वर्ष पूर्व लाहौर मे भी किये गये थे जिनका संतोषजनक परिणाम नही निकला था । उनकी असफलता के कारणों का वर्णन Professor J.F Bruce की 1933 मे छपी पुस्तक 'A History of University of Punjab' मे उपलब्ध है।

It was recorded by Prof. Bruce at the conclusion of Golden Jubilee of the University that the sustenance of broad based Honours School programme on behalf of Faculty of Arts would be possible only after the establishment of strong departments in the individual disciplines comprising the Faculty of Arts. The academia at Panjab University Chandigarh had thought of initiating such an Honours School once again in recent decades, however, destiny had willed it to commence only after the evaluation of PU by the NAAC peer team in March 2015. The inauguration of Institute of Social Science Education and Research, i.e., ISSER, at PU Campus from the current academic year has received an overwhelming response from the top performing students qualified through the Senior Secondary Board Examinations of 2015. Most ingredients for the success of ISSER are in place at the moment. Experienced faculty colleagues have come forward to teach the first batch of students and the new premises have been made available by the University to house

ISSER. One serious handicap at the present juncture is the hostel accommodation for these new students. The residential accommodation for good students desiring to enroll at the Panjab University Campus from all parts of India, is a challenge which we must meet by exploring unorthodox and novel means. Though, University of Punjab at Lahore established in 1882 is reckoned as the fourth oldest University in Indian Sub-Continent, however, the Campus part of the University before Indian Independence was a tiny entity at Lahore in terms of number of faculty members and the number of students enrolled at its Honours Schools in Sciences and the postgraduate programmes in Humanities at its core. The new premises of our University in the newly created capital city of Chandigarh were conceived as a residential campus where most students coming from all the affiliated colleges of PU were not expected to be residents of Chandigarh. The Chief Architect of the City, Le Corbusier, had assigned the responsibility of the design and construction of the University to his favourite Cousin Pierre Jennarret, who gave special attention to the location of the students hostels and residential accommodation of teaching faculty vis-a-vis the teaching departments. The contemporary Panjab University Campus is unable to strike a right balance between the infrastructure of the University and the growing number of students and Faculty of this University. This has affected the attractiveness of the University as the most sought after destination by the best of the students nationally. In the face of the growing competition from new Central Universities with more modern infrastructure and better service conditions for their teachers, all the stakeholders of Panjab University need to strategies together to sustain the current high standing of the University amongst national institutions. The improvement in the overall standing of PU amongst international institutions is another matter altogether. In spite of satisfactory standing of the Panjab University amongst best of the peer institutions notionally, notwithstanding the visits

of Secretary, Higher Education, MHRD, Union Minister of Human Resource and Development, Chairman, UGC, the Vice-President and the President of India to the PU Campus during the last two years, the fundamental issues pertaining to the sustenance of the financial well being of the University remains unresolved. The UGC and the NAAC peer teams have enjoined PU to fill up all the vacant teaching positions to have healthy students to teachers ratio, to impart quality education to enhance the quality of research to provide for the choice based credit system and skill development opportunities, etc. All these necessary requirements need additional resources, and in the present mode of functioning, the University has no way of provisioning for them. The University is at the critical crossroad at the moment. This national institution needs attention from all its stakeholders from amongst the civil society, the elected representatives, the Union Government, the present and past Senate and Syndicate members, the alumni of PU and not to be left behind the Punjabi Diaspora spread over the globe. All of us take pride in its rich heritage and the achievement of its iconic alumni in all walks of life. The Independence Day address by me is perhaps not the right moment to discuss further details.

ਮੇਰਾ ਅੰਦਾਜਾ ਹੈ ਇੱਕ ਚੇਤਨਾ ਜਰੂਰ ਹਰ ਥਾਂ ਫੈਲ ਗਯੀ ਹੈ ਕਿ ਆਪਣੀ ਮੁਸਕਲਾਂ ਦਾ ਹਲ ਢੂੰਡਣ ਦੀ ਪਹਿਲ ਮੋਜੂਦਾ ਅਧਿਆਪਕਾ ਨੂੰ ਹੀ ਕਰਨੀ ਪਏਗੀ। ਸ੍ਮਾਜ ਦੇ think tank ਮੇਰੇ ਸਾਥੀ ਪ੍ਰੋਫੇਸ੍ਰਰ ਹੀ ਹਨ । ਸ੍ਮਾਜ ਦੀਯਾਂ problems ਤੇ research ਕਰਨ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ, ਉਨਾਂ ਦੇ ਵਾਸਤੇ ਏ ਸੋਚਣਾ ਵੀ ਜਰੂਰੀ ਹੈ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਸੇਕਟਰ ਦੀਯਾਂ Universities UGC ਦੇ ਨਿਯਮਾਂ ਨੂੰ ਪਾਲਣ ਕਰਦਿਆ ਹੋਏ, ਬਿਨਾ adequate ਅਤੇ assured sources ਦੇ ਕਿੰਨੀ ਕੁ ਦੇਰ ਤਕ healthy and financially viable ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਰਹਿ ਸਕਨ ਗੀਯਾਂ । ਅਜ ਦੇ ਸਮੇ ਚ ਹਰ University ਅਤੇ ਉਸਦਾ ਹਰ affiliated college, ਇਕ mixed system ਨੂੰ operate ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ । ਇੱਕ ਤਰਫ ਹੈ ਪੁਰਾਣੇ ਚ੍ਲ ਰਹੇ courses, ਪੁਰਾਣੇ well known and experienced teacher ਅਤੇ ਪੁਰਾਣਾ decaying infrastructure ਹੈ, ਅਤੇ ਦੂਜੀ ਤਰਫ ਹੈ, the so called professional courses

commenced in twenty first century, which required new infrastructure and ever changing technological upgradation of their facilities as well as the knowledge by their newer faculty. ਸਰਕਾਰਾਂ ਦੀਯਾਂ financial sanctions ਅਤੇ participation ਦੂਜੇ ਹਿਸੇ ਲਈ almost non-existent ਹਨ । ਏਸ ਕਰ ਕੇ Universities ਅਤੇ colleges ਦੇ deficit, inflation ਦਾ ਰੇਟ ਤੋ ਕਈਂ ਜਿਆਦਾ ਰਫਤਾਰ ਨਾਲ ਵਧਦੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ । ਏਸ਼ spiraling cycle ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਵਾਸਤੇ ਕੋਈ ਰਸਤਾ ਲਬਨਾ ਜਰੂਰੀ ਹੋ ਗਿਯਾ ਹੈ । ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਵਾਸਤੇ ਅੱਸੀਂ ਏਸ financial year ਵਿਚ ਕੇਂਦ੍ਰ ਸਰਕਾਰ, U.G.C. ਅਤੇ Chandigarh Administration ਦੇ ਨਾਲ ਤਾਲ ਮੇਲ ਬਿਠਾ ਕੇ solution ਕੱਡਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ, ਮੇਰੀ ਉੱਮੀਦ ਹੇ ਕਿ 2016 ਦੇ ਗਣਤਤੰਰ ਦਿਵਸ ਤਕ ਕੁਜ ਨਾ ਕੁਜ ਜਰੂਰ ਹੋ ਪਾਏਗਾ ਅਤੇ ਸਤਵੇਂ Pay Commission ਦੀਯਾਂ ਸ਼ਿਫਾਰਸਾਂ ਆੱਨ ਤੋ ਪਿਹਲੇ ਅਸੀਂ ਕੁਜ ਘਟ ਚਿੰਤਿਤ ਦਿਖਾਂਗੇ ।

अभी तक मैने स्कूली विधार्थियों के लिए कुछ नही कहा है, इसका मुझे खेद है नवीं एवं दसवीं कक्षा के विधार्थियों के लिए मैं यह सूचना देना चाहता हूँ कि भारत सरकार के विज्ञान और Technology विभाग के सोजन्य से पंजाब यूनिवर्सिटी मे साल मे 3 - 4 बार INSPIRE शिविरों का आयोजन किया जा रहा है जिसने देश विदेश के नामी वैज्ञानिक आकर स्कूली विधार्थियों को संबोधित करते है, इनके लिए नये प्रयोगों को दिखाया जाता है। मैने भी पहले शिविर मे एक दिन शिरकत की थी जिसमे एक Nobel Prize Winner ने दो घंटे स्कूली विधार्थियों के साथ बिताए और 40 से ज़्यादा बच्चों के सवालों का जवाब दिया । ऐसा ही एक और Session Nobel Prize Winner in Medicine in 2001 Professor Leland Hartwell के साथ Friday, 21st August, 2015 सुबह नौ बजे University Auditorium में आयोजित किया जा रहा है। University Campus और उसके पड़ोस के स्कूलो के 9th - 10th class और 11th - 12th class के विधार्थी अपने विज्ञान के teachers के साथ वहाँ आमंत्रित है। इसके अतिरिक्त अगले साप्ताह PU Open Minds के सोजन्य से Mathematics के दो Lectures का आयोजन किया जा रहा है जिसे यूनिवर्सिटी के युवा अध्यापक PU की outreach बढ़ाने के लिए एक अभियान की तरह चला रहे हैं। मैं DST Inspire शिविर और PU Open Minds के संयोजको को इस सराहनीय कार्यों के लिए बधाई देता हूँ ।

To conclude, let me share with all of you that Chief Architect of UT Administration has asked us yesterday to submit information for allotment

of 145 acres of land earmarked for PU in the Sarangpur area in the Master Plan of Chandigarh 2031. This augurs well for PU and this development indeed commemorates the Independence Day 2015 for all of us.

In the end, I wish to thank all the participants from the two schools, their teachers, the students and Faculty of Music Department of PU and the Security persons and other staff of PU for the organization and success of today's Independence Day programme.

Thank you.

Please join me three times in saying

Jai Hind ! Jai Hind ! Jai Hind !